(Hindi)

1524/10121

576 — 12 — p

* बन्देमातरम् *

आज़ाद भारत ट्रैक्ट नं० ३

यानी क्रान्ती की

॥ गीताञ्जली ॥

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED 30 MAR 193

सम्पादक:—

मोहरचन्द्र "मस्त" साकिन कंवाली
जिला गुड़गांव।

सोल ऐजेन्ट—गिरधारीलाल बुकसेलर
खारी बावली, देहली।

मूल्य केवल -)

नारायणदास गुप्त के प्रबन्ध से द्वादशश्रेणी प्रेस, फतेहपुरी, देहली में छपा।

बन्देमातरम्

छीन सकती है नहीं, सरकार बन्देमातरम् ।
हम ग़रीबों के गले का हार बन्देमातरम् ॥ १ ॥
सर चढ़ोंके सर में चक्कर उस समय आता ज़रूर ।
कान में पहुंची जहां भनकार बन्देमातरम् ॥ २ ॥
हम वही हैं जोकि होना चाहिये इस वक्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम् ॥ ३ ॥
ज़ेल में चक्की घसीटे भूक से हो मर रहा ।
उस समय हो बक रहा बेज़ार बन्देमातरम् ॥ ४ ॥
मौत के मुंह पर खड़ा है कह रहा जल्लाद से ।
भौंक दे सीने में वह तलवार बन्देमातरम् ॥ ५ ॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी, सर हिलाकर कह दिया ।
होगया इसको तो ये आज़ार बन्देमातरम् ॥ ६ ॥
ईद होली और दशहरा, शुभरात से भी सौगुना ।
है हमारा लाडला त्यौहार बन्देमातरम् ॥ ७ ॥
ज़ालिमों का ज़ुल्म भी काफ़ूर सा उड़ जायगा ।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥ ८ ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 576
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

स्वदेश प्रेम नं० २

सेवा में तेरी भारत तन मन लगायेंगे हम ।
फिर स्वर्ग का सहोदर तुझ को बनायेंगे हम ॥

तुझ से जिये तुझी ने, पालन किया हमारा।
उपकार जितना करता, क्या क्या गिनाएंगे हम ॥
तेरे ऋणों का बोझा सर पर धरा हमारे ।
करके प्रयत्न पूरा उस को चुकाएंगे हम ॥
तेरे लिये जियेंगे तेरे लिये मरेंगे ।
आखिर स्वतन्त्र करके, तुझको दिखाएंगे हम ॥

कर्म्म—युग ३

आगया है कर्म्म युग, कुछ कर्म्म करना सीखलो ।
देश पर अरु जाति पर हंस हंस के मरना सीखलो ॥
मारने का नाम मत लो खुद आप मरना सीखलो ।
मिस्त्र आयर्लैण्ड दब कर, फिर उभरना सीखलो ॥
पार यदि होना तुम्हें परतन्त्रता दुःख सिन्धु से ।
तैर कर के रक्त—सागर, से उतरना सीखलो ॥
तीर्थ यात्रा के लिये, दिन रात उत्साहित रहो ।
कृष्ण जन्म—स्थान में, निर्भय विचरना सीखलो ॥
देखना है दृश्य, भारत में यदि तुम्हें स्वर्ग का ।
देश का तो प्राण पण से, दुःख हरना सीखलो ॥

गाना ४

यह आर ज़ू है मेरी भारत पै वार कर दूं ।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसार करदूं ॥
ऐसी हवा चलाऊं जायें यह दिन खिज़ां के ।
भारत के गुलसितां में मौसम बहार करदूं ॥

ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे हौसला दे।
भारत की उन्नति की नावों को पार करदूं॥
यह भारती गुलामी की कौम के बदन पर,।
पहनी जो मुदतों से यह तार तार करदूं॥
ऐसी करूं तपस्या स्वराज्य लेकर छोडूं।
मिट जाए बेकरारी दूर इन्तज़ार करदूं॥

शहीदों के लाशे के प्रति नं० ५

भाइयो नहीं है लाशा यह बे कफन तुम्हारा।
है पूजने के लायक पावन बदन तुम्हारा॥
दिन आज का यह होगा त्यौहार एक क़ौमी।
बैकुण्ठ को हुआ है इस दिन गमन तुम्हारा॥
ज़ाया लहू तुम्हारा जाने का यह नहीं है।
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा॥
खुद मरके जिस्म कौमी में तुमने जान डाली।
जाति का है यह जीवन गोया मरण तुम्हारा॥
सब भक्तियों से बढ़ कर उत्तम है देश भक्ति।
छूटा है बाद मुद्दत आवागमन तुम्हारा॥
इतिहास में रहेंगी कुर्बानियां तुम्हारी।
तुम पर फ़ख़र करेगा प्यारा वतन तुम्हारा॥

[लेखक मोलवी इमदाद हुसेन साहब नं० ६]

गुलामी से हमको छुड़ाऐगा गाढ़ा
मुसीबत से यारो बचाऐगा गाढ़ा॥

हज़ारों वर्ष से बिगड़ तो गई है।
बस अब बात अपनी बनाएगा गाढ़ा॥
हर शख्श फिर हक़ को पहचान ले गा।
अगर जलवा अपना दिखाएगा गाढ़ा॥
कलेजे से अपने करें क्यों जुदा हम।
के जिन्नात में हूरें बिला येगा गाढ़ा॥
नज़र साफ आजाएगा नूर वहदत।
दुइ का जो परदा उठाएगा गाढ़ा॥
न पहनेंगे मलमल न पहनेंगे लट्ठा।
जहां तक हमें हाथ आएगा गाढ़ा॥
खुदा की अगर उस में ताईद होगी।
खुश इक़बाल यारो बनाएगा गाढ़ा॥
अभी मानचेस्टर की क्या गत बनी है
बड़े नाच इस को नचाएगा गाढ़ा॥

उम्मीद की झलक ७।

अरुजे कामय.वी पर कभी हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशयां होगा॥
चखायेंगे मज़ा बरबादिये गुलशन का गुलचीं को।
बहार आजायेगी उस दिन जब अपना बागवां होगा॥
वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तिहां होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़।

न जाने बाद मुर्दन में कहां और तू कहां होगा ॥

यह आये दिनकी छेड़ अच्छी नहीं ऐ खञ्जरे क़ातिल।
बता कब फैसला उन के हमारे दर्मियां होगा ॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा ॥
कभी वह दिन भी आयेगा कि जब स्वराज देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मी होगी जब अपना आसमां होगा ॥

वीर गर्जना ८

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पासदो फटकने।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वातन्त्रता देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों को इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥
दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक़ करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
दिल में झिझक न लाओ आगे क़दम बढ़ाओ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना ॥

'सूरज' समय यही है कुछ करलो देश सेवा।
दो दिनकी जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना॥

तरानये फ़लक ९

बाग से सर सर का झोंका, आशियाना लेगया।
अन्दलीबों को क़फ़स में, आबोदाना ले गया॥
कुछ गुले गुल्चीं का शिकवा, बुल बुले भारत न कर।
तुझको पिञ्जरे में है तेरा, चहचहाना लेगया॥
कौन कहता है जबर्दस्ती, से हम पकड़े गये।
ज़ेल में खुद हमको शौके, ज़ेलखाना लेगया॥
क्यों घटा अदवार की छाये, न अहले हिन्द पर।
खींच कर यूरोप है सब, मालो खजाना ले गया॥

(हम आने वाले हैं नं० १०)

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीन अच्छे दिन आने वाले हैं।
आजादी का पैगाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं॥
मां तुझको जिन जल्लादों ने, दी तकलीफ जईफी में।
मायूस न हो मगरूरों को, हम मजा चखाने वाले हैं॥
कमजोर हैं और मुफलिस हैं हम, गो कुञ्जकफसमें बेबस हैं॥
बेकस हैं लाख मगर माता, हम आफत के परकाले हैं।
हिन्दु और मुस्लिम मिल करके, चाहे जो हम कर सकते हैं॥
ऐ चर्ख कुहन हुशियार हो तू, पुरशार हमारे नाले हैं।
मेरी रूहको करना कैद कतल, इमकान से बाहर है उनके॥

आजाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़ुबां पर ताले हैं।
मगलूम जो हैं होंगे गालिब, महकूम जो हैं होंगे हाकिम ॥
सदा एकसा वक्त रहा किसका कुदरत के तौर निराले हैं।
गान्धी ने तर्क ताश्राऊन का यह कैसा मन्त्र चलाया है ॥
लरजा है जिससे अर्जसमां, सरकार को जाने के लाले हैं।

एक सत्याग्रही का ऐलान नं० ११

पारटी अपनी क़ौमी बनाकर, लेंगे स्वराज जेलों में* जाकर।
अबतो चमका मुकद्दर का तारा, रंजो ग़म दूर होगा हमारा
नारा अल्लाहो अकबर लगाकर ॥ लेंगे०
डर नहीं जेलख़ाने से हमको, काम मतलब बरारी से हमको।
जाते हैं जेल खुशीयां मना कर ॥ लेंगे०
जेलख़ाना है आज़ाद* का घर, घरसे आज़ाद* के माल को भर
सर पर दुश्मन के डंका बजाकर ॥ लें०
हमतो जाते हैं अब तुम संभालो, काले भाई की सुन लो ए कालो
गोरा चमड़ा रहेंगे हटाकर ॥ लें०
जेलख़ना है बुनियाद• सब की, उस में जाकर पीसेंगे चक्की।
नाम ज़िंदों में अब हम लिखाकर ॥ लें०
मर्दे मैदान है गांधी जी का, और जवाहर व अब्बास जी का।
हुक्म दिल और जां से बजाकर ॥ लें०
जेलख़ाने का कुछ डर नहीं है, फांसी पाने का कुछ ग़म नहीं है।
छोड़ें दुश्मन का बेड़ा डुबाकर ॥ लें०
या इलाही हमें जो सतावे, चैन दुनयां में हरगिज़ न पावे

तेरी रहमत को हमराह लाकर ॥ लें ०

नोट—इन (*) निशानों में ससुराल लिखा हुवा था।

चुरंगी चोला नं० १२

मेरा रंगदे चुरंगी चोला, मां रंगदे चुरंगी चोला ॥ टेक
इसी रंग में रंग के शिवा ने, मां का बन्धन खोला ॥ मां०
यही रंग प्रताप सिंह ने हलदी घाट में खोला ॥ मां ०
इसी रंग में तिलक देव ने था स्वराज टटोला ॥ मां ०
इसी रंग में लाला जी ने मां का चर्ण टटोला ॥ मां ०
इसी रंग में भगत दत्त ने दुश्मन का दिल छोला ॥ मां ०
इसी रंग में यतिन्द्र दास ने अपना छोड़ा चोला ॥ मां ०
इसी रंग मे बिस्मिल जी न स्वर्ग का फाटक खोला ॥ मां ०
इसी रंग में सत्यवती ने जेल का फाटक खोला ॥ मां ०
इसी रंग में गांधी जी ने नमक पर धावा बोला ॥ मां ०
यही रंग अब्बास तैयब ने जेल में जा के घोला ॥ मां ०
इसी रंग में जवाहर लाल ने आत्म बल को तोला ॥ मां ०
इसी रंग में तारा सिंह ने सिक्खों का सत तोला ॥ मां ०
इसी रंग में मदनमोहन का असेम्बली से दिल डोला ॥ मां ०
इसी रंग में मोती लाल का कानून से दिल डोला ॥ मां ०
इसी रंग में सैय्यद जी ने अल्लाहो अकबर बोला ॥ मां ०
इसी रंग में सत्याग्रह ने वन्देमात्रम् बोला ॥ मां ०
इसी रंग में अब वीरों ने चमकाया है शोला ॥ मां ०
इसी रंग में लिया देश ने आज़ादी का झोला ॥ मां ०

लेखक—पण्डित गोविन्द प्रसाद मिश्र नं० १३

सायमन साहब ने लिखा है हिन्द की तकदीर में।
तौक़ गर्दन में रहे और पैर हों जंजीर में॥
कौन मानेगा भला कहना तुम्हारा अय जनाब।
रास्ती की बू नहीं हैं आपकी तहरीर में॥
लद गये दिन रोब के जाता रहा कुल एतवार।
ख़ौफ की बू तक नहीं बाकी रही ताजीर में॥
मौत को भी प्यार करना सीखते जाते हैं हम।
इस कदर उलटा असर है आपकी तहरीर में॥
कह रही है आस्मां से लाजपत की रूहे पाक।
अब नहीं बंधने का सैदा इण्डिया नखचीर में॥
आपकी शक्ल रंगिया बस देखने ही भर की हैं।
जिस तरह नाज़ो अदा की शान हो तस्वीर में॥
शाने शाहो की नहीं दुनियां में गुन्जायस रही।
कह रहे हैं रूसो टरकी जोर की तकरीर में॥
देखता है ख्वाबेशाही अब भी इंगलिस्तां अगर।
हम भी कह सकते हैं कुछ इस ख्वाब की तावीर में॥
जलने ही वाला है उठता है धुवां जालिम के घर।
है यकीं कामिल मुझे इस गांधी की तासीर में॥

गायन-१४ महात्मा गांधी ने

महात्मा गांधी ने हिला दियो संसार। टेक
वह भोली भाली शकल वाला।
दुनिया में बड़ी अक़ल वाला॥

अन्याय मे है वोह दखल वाला।
जिस से कांपे सरकार ॥
वह दुबला पतला इक नर है।
जिस को अति प्यारा खद्दर है॥ म०
नहिं जग में उस को कुछ डर है।
रहता है बिन हथियार ॥
इक चर्खा उसकी मशीन गन है।
कुछ खद्दर धारी पलटन है ॥
कोई मोटा कोई सूखे तन है।
लै सत्या ग्रह तलवार ॥ म०
नहीं ताज साज वाला है।
नहीं नखरे नाज़ वाला है ॥
इक ख़ाली लंगोटी वाला है।
जिस पै बढ़ते हथियार ॥
वह कहता मुल्क न ग़ारत हो।
हां बेशक नेक तिजारत हो ॥
और कहे स्वतंत्र भारत हो ।
बस चाहता निज अधिकार ॥म०

वीर हृदय नं० १५

देश की ख़ातिर मेरी दुनियां में गर तौक़ीर हो।
हाथों में हों हथकड़ी पावों पड़ी ज़ंजीर हो॥
आंखों की ख़ातिर तीर हो, मिलती गले शमशीर हो।
इस से भी बढ़ कर कोई दुनियां में गर तौक़ीर हो॥
मर कर भी मेरी जान पर ज़हमत बिला ताख़ीर हो।
मेरी ख़ातिर ख़ालकर दोज़ख नया तामीर हो॥
सूली मिले फांसी मिले या मौत दामनगीर हो।
मंजूर हो मंजूर हो, मंजूर, हो, मंजूर हो॥

असहयोग नं १६

तब्दील गवर्नमेंट की रफ़्तार न होगी।
गर क़ौम असहयोग पर तैयार न होगी॥
बन जाएँगे हर शहर में जलियान वाले बाग़।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी॥
ये जेलख़ाने टूट कर अब और बनेंगे।
इसमें तमाम क़ौम गिरफ्तार न होगी॥
सोदाई हैं हम वतन के दो लोहे की बेड़ीयां।
सोने के ज़ेवरों में झंकार न होगी॥
दुशमन को असहयोग से हम ज़ेरकरेंगे।
इन हाथों में बन्दूक़ या तलवार न होगी॥
कुछ मिलगये हैं ऐसे मुसलमान व हिंदू।
बस अब तमीज़ तस्बी व जुन्नार न होगी॥
हम ऐसी हकूमत को मिटा देवेंगे बिल्कुल।
ग़म में हमारे जो कभी ग़मख्वार न होगी॥

स्वतंत्रता-पूजन नं० १७

आधीन होकर बुरा है जीना मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
सुधा को तजकर ज़हर का प्याला है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
पड़ी हों हाथों में हथकड़ी यदि तो स्वर्गके सुख से लाभ क्या है
नरक के दुर्ग में निवास निशिदिन है करना अच्छा स्वतंत्र होकर
जोदास होकर मिलें भवन में सोस्वादु भोजन तो तुच्छ हैं सब।
सदैव उपवास करके बन में विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
मिले उपाधी या मान पदवी जो सेवा करके व्यर्थ हैं सब।
घृणा के गढ्ढे में हो के व्याकुल उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

चर्खा नं० १८

चर्खा का छोटा तकुआ खोटा तुवार निकला। भाले की नोक तुझ से बेकार हो रही है॥ अंग्रेजी मिल्स सारे अब हाथ मल

रहे हैं। रफ्तार तेरी उन को आज़ार हो रही है। हैं पेचो ताब खाते तागे की ऐंठ से हैं। इमदाद तेरी हम को गमख्वार हो रही है ॥ चक्कर को देख तेरे चक्कर में सब पड़े हैं। तादाद तेरी उन को अश्वार हो रही है ॥ गाढ़े ने तेरे ऐसा गाढ़ा है रंग जमाया। मल मल के हाथ मलमल ही ख्वार हो रही है ॥ झन्कार यह वही है जो चक्र पाणी में थी। भारत की द्रोपदी को दरकार हो रही है ॥

दोहा— गाढ़ा खद्दर का यहां घरा घर हो प्रचार।
कर में चरखा चक्र ले, करघा करो त्यार ॥

महात्मा गांधी जी की ११ शर्तें नं० १६

महात्मा गांधीकी ग्यारह शर्तें, अमलमें लाकर दिखाना होगा।
प्रजाके आगे तुझे, सितमगर सर अपना अबतो झुकाना होगा॥
१. नशीली चीज़ें शराब, गांजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटाके इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा ॥
२. हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा-बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनो, ही भाव उसका बनाना होगा॥
३. लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिलके ताबे तुमको रखाना होगा॥
४. फ़िज़ूल-खर्ची, बिला ज़रूरत, जो फ़ौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं तो आधा उसको, ज़रूर साहब ! घटाना होगा॥
५. बड़े २ भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससेभी कम कराना होगा॥
६. स्वदेशी कपड़े करें तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़े पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा॥
७. समुद्र-तट का जहाज़ी बाणिज्य, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के अधीन हो कर चलाना होगा॥
८. जिन्हें कतल, या कतल-इरादा, सजा मिली हो, उन्हें न छोड़ें।
बकाया कैदी पुलीटिकल सब, तुरन्त साहब छुड़ाना होगा॥

९. उठा लिये जायं राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौचौबिस दफा अलिफहै,उसेतो बिल्कुल मिटाना होगा
१०. अठारह का एक्ट रेगुलेशन, तथा दफा ऐसी सब उठाकर।
जिलावतन सब हमारे भाई, वतन में साहब! बुलाना होगा ॥
११. महकमा खुफिया-पुलिस उठादो,या करदो उसको प्रजाके ताबे
हमें भी बंदूक और पिस्तौल, बरा हिफ़ाजत दिलाना होगा ॥
हमें सबर होगा बस उसी दम, जब होंगी पूरी ये ग्यारह शर्तें
सहे हैं जुल्मो सितम हज़ारों न ज्यादा हमको रुलाना होगा

रावण अंगद सम्बाद न० २०।

टेक—तू मान हमारा कहनारे ओ लंकापति बलवान्।
तू दिल में था गर्भाया ऋिषयों का खून मंगवाया॥
उन पर ऐसा टेक्स लगाया जो खोदेगा तेरीजान ॥ १ ॥
भारत की लक्ष्मी माई कर कपट तुझे है चुराई।
होरहा बड़ा अन्याइ रे तू है पक्का बेइमान ॥ २ ॥
हम से तू बैर बढ़ा के नहीं सोवेगा सुख पाके।
आखिर ने जान गमाके रे तू लेटेगा समशान॥ ३ ॥
जो चाहे भलाई अपनी दे राम चन्द्र की पतनी।
नहीं तो फौज तुम्हारी खपनी है इन बातों पर धर ध्यान ४
अगर तू यह समझे है बीर सिर्फ लछमन के पास हैं तीर
तेरी हम देंगे देही चीर हमारी सक्ती है कृपान ॥ ५ ॥
याता वापिस उसे दीजिये वरना- बिस्तर बांध लीजिये।
दोनों में एक कीजयेरे यह मोहर चन्द का गान ॥ ६ ॥॥

(जब रावन ने कहा के हमारे सन्मुख लडने वाला तुम्हारी सैना में
कोई नहीं क्यों के राम तो स्त्री का वियोगी है जामवंत बूढा है

गजल न० २१

सोचले कुछ अब भी तू वरना बड़ा पछतायगा।
तेरी जगह पर और कोई फिर हुक्म फरमायगा॥

है लङ्का के बीर भारत के बडे रणधीर हैं।
सुग्रीव और नल नील की तू कुछ भी न थाह पायगा ॥
जो कहा हथियार उनके पास हैं बिलकुल नहीं।
तो समझ जामवंत का मुक्का नहीं सहा जायगा ॥ २ ॥
नः चलेगा छल कपट तेरा अगाडी राम के
देके धोखा लाया सीता पाप वोह तुझे खायगा ॥ ३ ॥
जिन को तू खाना समझता वह गाहक तेरी जान के
सोरहा गफलत में जिन के वह तुझे मरवायगा ॥ ४ ॥
तुम निहत्थे समझ कर गुमान दिल में न करो
कहता मोहर चन्द फिर हनुमंत से लंक जलायगा ॥ ५ ॥

उतना ही वह उभरेंगे २२

ज़िन्दा हैं अगर ज़िन्दा, दुनियां को हिला देंगे।
मशरक़ का सिरा लेकर, मग़रब से मिला देंगे ॥
हम सीनये हस्ती में, अंगारा हैं अंगारा।
शोले भड़क उठेंगे, झोंके जो हवा देंगे ॥
मज़दूर हों दहकां हों, हिन्दू हों मुसलमां हों।
सब एक तो हो जाओ, फिर उनको दिखा देंगे ॥
हम कौन हैं हम क्या हैं, हम कुछ भी न हों लेकिन।
वक्त आने दो वक्त आने पर, फिर उनको दिखा देंगे ॥
मज़दूर की फ़ितरत में, कुदरत ने लचक दी है।
उतना ही वह उभरेगा, जितना कि दबा देंगे ॥
मज़दूर के नालों से, आतिश भड़क उठेगी।
चलते हुए पानी में, हम आग लगा देंगे ॥
तारी किये गफलत में, हैं जो कि पड़े सोते।
यह नज्म "शफी" पढ़कर, हम उनको जगा देंगे ॥

निम्न लिखत पुस्तकें मंगा कर लाभ उठावें।

अनोखा बिवाह:— इसी जमाने का सच्चा हाल जो कि फूल के मानिन्द ताजा है इस सांगीत में वेद और पुराणों के नाम से अधर्म फैलाने वालों का असलियत फोटू है जिसमें एक साहूकार साठसाला बूढ़ा चौदह वर्ष की लड़की के साथ शादी करता है और बेटी बेचने वाला भी वैदिक धर्मी से लड़की का रुपया लेता है, आखिरी नतीजा उनका क्या होता है वह इसी सांगीत को पढ़ कर मालूम कीजिये, कीमत दो हिस्सों के केवल ।=) छः आने हैं, आज ही अवश्य मंगाकर पढ़िये।

जेबी ज्योतिष:—यह पुस्तक मि० टी. एन. खन्ना जी ने बड़ी २ ज्योतिष की पुस्तकों के स्वाध्याय के बाद तैयार की है रोजगार शुरू करना, इम्तिहान देना, सगाई होना, खोई चीज की जांच करना, बीमारी, दिल का फिक्र, गर्भ में लड़का है या लड़की इस तरह के ४० प्रश्नोत्तर बड़े सही तौर से लिखे गये हैं आज ही =) के टिकट भेज कर पुस्तक मंगा लीजिये।

एक रुपये में घर बैठे १६ पुस्तकें मँगा कर पढ़िये।

१ गांधी का सुदर्शन चक्र २ गांधी का फौजी ऐलान ३ क्रांती की गीताञ्जली ४ शहीदी शंदेश ५ आज़ादी की देवी ६ हिन्दुओं की नोट बुक ७ हीरे की कनी ८ फैशन का झगड़ा ९ नया फैशन १० जन्टिलमैन ११ शार्टीफिकट १२ स्त्री उपदेश १३ पञ्जाबी बहार १४ मजा की सजा १५ गौभजन १६ सत्य उपदेश।

सिर्फ चार २ आने में टायटिल समेत पुस्तकें, खर्चा माफ़

१ गांधी उपदेश २ चटपटा उपदेश ३ आर्य उपदेश ४ स्त्री उपदेश ५ फैशन का पास ६ चढ़ती जवानी ७ इंगलिशटीचर।

मोहरचन्द "मस्त" साकिन कंवाली जि० गुड़गांव।

(२) गिरधारीलाल बुकसेलर खारी बावली देहली।